टिप्पणी

6

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

आप इस बात से सहमत होंगे कि देश को गौरव दिलाने में महिलाओं की भागीदारी बहुत महत्त्वपूर्ण है। कई महिलाओं ने अपनी शक्ति, उत्साह और लगन के सहारे अनेक क्षेत्रों में बहुत नाम कमाया है। फ़िल्म-संगीत की ही बात करें, तो आप लता मंगेशकर को याद करेंगे। ओलंपिक की स्पर्धाओं के संदर्भ में आप 'उड़नपरी' पी.टी. उषा, कर्णम मल्लेश्वरी और सुनीता रानी को याद करेंगे। इसी प्रकार, सांस्कृतिक क्षेत्र में सरोजिनी नायडू को और राजनीति के क्षेत्र में अरुणा आसफ़ अली को याद करेंगे, जिनका नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज़ है। इंदिरा गांधी को भारत तो क्या, पूरी दुनिया कभी भूल नहीं पाएगी।

गरीबों और कुष्ठ रोगियों की सेवा के द्वारा मदर टेरेसा ने संत की ऊँचाई पा ली। क्या आपने भी ऐसी प्रसिद्ध महिलाओं के बारे में सुना है? आइए, भारत की ऐसी ही दो बहादुर बेटियों के विषय में पढ़ें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- वर्तमान समाज में स्त्री के जीवन और कार्य-क्षेत्र के प्रति उसकी सजगता को समझ कर उसका उल्लेख कर सकेंगे;
- सामाजिक दबावों के बीच अपनी पहचान स्थापित करने के लिए किए गए स्त्री-संघर्ष की व्याख्या कर सकेंगे;
- स्त्री की शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक सबलता का विश्लेषण कर सकेंगे;
- आदर्श महिलाओं की उपलब्धियों का वर्णन कर सकेंगे;

- आधुनिक सफल नारी के आत्मविश्वास और स्वावलंबन का उल्लेख कर सकेंगे;
- समाज के लिए नारी-शक्ति की उपयोगिता तथा उसके महत्त्व को व्याख्यायित कर सकेंगे;

क्रियाकलाप-6.1

नीचे दिए चित्रों को ध्यान से देखिए और बताइए कि ये चित्र किनके हैं :

क................................ ख................................ ग................................

इनके और अधिक चित्र तथा विवरण एकत्रित कर फ़ाइल तैयार कीजिए।

6.1 मूल पाठ

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता:' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है यानी वहाँ सुख-समृद्धि, शांति होती है। यह बात प्राचीन काल में मनुस्मृति में कही गई थी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि उस वक्त नारी का सम्मान नहीं होता था और यह बात नारी के सम्मान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कही गई थी। बल्कि यह बात अनुभव से कही गई थी। प्राचीनकाल में हमारे देश में नारी समाज की बहुत ही सम्माननीय सदस्य थी। गार्गी, मैत्रेयी, गौतमी, अपाला आदि प्राचीनकाल की प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नारियाँ हैं। प्राचीनकाल से ही नारियाँ हमारे देश में पुरुष के बराबर बैठती रही हैं और समाज के निर्माण–कार्यों में अपना योगदान देती रही हैं।

भारत की ये बहादुर बेटियाँ

आधुनिक काल में भी नारी एक बार फिर से अपनी पूरी क्षमता, शक्ति और साहस के साथ समाज में दिखाई देने लगी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार से वह पूरी तरह आत्मविश्वास से भर गई। आप आज़ादी की लड़ाई का उदाहरण ही लीजिए। भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि बहुत सारे नाम आपके जेहन में आते जाएँगे। गांधीजी के एक आह्वान पर न जाने कितनी महिलाएँ घर-बार छोड़ कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पड़ीं। चाहे वो गाँव की हों, छोटे कस्बे की हों, शहर की हों, या महानगर की हों, चाहे वे पढ़ी लिखी हों, चाहे गरीब हों या अमीर, सभी वर्गों की नारियाँ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई में घर से बाहर निकल पड़ी थीं।

आजादी के बाद, वर्तमान समय में, जब शिक्षा और तकनीक की सुविधाएँ बढ़ी हैं, तो महिलाओं ने एक बार फिर से अपनी क्षमता, साहस और बुद्धिमता का परिचय देना शुरू कर दिया।

चित्र 6.1

आज, जब यह कहा जाता है कि महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं हैं तो इसलिए नहीं कि उनके प्रति दया-भावना है, बल्कि उन्होंने यह बात सिद्ध कर दिखाई है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिसमें महिलाओं की भागीदारी नहीं है– चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, प्रशासन हो, राजनीति हो, अर्थव्यवस्था, व्यापार या तकनीक क्षेत्र हो– हर जगह आपको महिलाएँ काम करती नज़र आएँगी। अब तो हिमालय की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट तक पहुँचने, अंतरिक्ष यान की यात्रा करने और पुलिस-प्रशासन के क्षेत्र में भी महिलाओं ने सफलता अर्जित कर ली है। आज चाहे हवाई जहाज़ उड़ाने का काम हो, रेल इंजन चलाने का काम हो, बस या ऑटो रिक्शा चलाने का काम हो या पेट्रोल पंपों पर पेट्रोल भरने का ही काम क्यों न हो– हर काम अब महिलाएँ कर रही हैं। इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हवाई जहाज़ के इंजन ठीक करने से लेकर स्कूटर ठीक करने तक में महिलाएँ सक्रिय हैं। इतना ही नहीं, अब तो उन्होंने पूरी दुनिया में सिद्ध कर दिखाया है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, ईमानदार तथा कुशल प्रशासक होती हैं।

आज समाज का चाहे जो भी वर्ग हो, हर वर्ग की महिलाएँ समाज- निर्माण के कार्य में आगे आ रही हैं। चाहे वे साधारण परिवार में पली-बढ़ी हों, मध्यम परिवार में पली हों या बिल्कुल निर्धन परिवार में, कोई भी अभाव उनकी क्षमता के आगे बौना ही साबित होता है। महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि कठिनाइयाँ चाहे जितनी बड़ी हों,

मुश्किलें चाहे जितनी विकराल हों, यदि साहस और आत्मविश्वास है, तो दुनिया का कोई भी कार्य कठिन नहीं है। यही कारण है कि महिलाओं ने न केवल अपने देश में, बल्कि विदेशों में भी भारत का नाम ऊँचा किया है। चाहे वह फ़िल्म-निर्माण या अभिनय का क्षेत्र हो, फ़ैशन का क्षेत्र हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, अनुसंधान का या अन्य कोई क्षेत्र– हर क्षेत्र में अपनी योग्यता का लोहा मनवाया है। अमेरिका और ब्रिटेन में ही चले जाएँ, जो कि दुनिया के शक्तिशाली देशों में गिने जाते हैं, वहाँ भारत की महिलाएँ चिकित्सा, कानून तथा फिल्म-निर्माण के क्षेत्र में पुरुषों से कहीं आगे हैं।

भारत की आधुनिक महिलाओं की बात करते हुए हम केवल अंतरिक्ष विज्ञान तथा खेल को ही लें, तो जो नाम सबसे पहले हमारे सामने आते हैं, वे हैं–कल्पना चावला, और बचेंद्री पाल। ये दो महिलाएँ अब भारतीय महिला के अदम्य साहस, बुद्धि कौशल और कर्त्तव्य निष्ठा की प्रतीक बन चुकी हैं। ये महिलाएँ किसी बहुत बड़े या संपन्न परिवार से नहीं आई हैं, न इन्हें कुछ ज़्यादा सुख-सुविधाएँ ही प्राप्त थीं। इनका पालन-पोषण भी सामान्य भारतीय लड़कियों की तरह ही हुआ था। इनकी शिक्षा-दीक्षा भी सामान्य लोगों की तरह ही हुई थी। जब इन्होंने अपने लक्ष्य की तरफ़ बढ़ना शुरू किया था, तब सामान्य लड़कियों की तरह ही इनका भी विरोध हुआ था, लेकिन इन्होंने अपने साहस और आत्मविश्वास के बल पर लोगों के विरोध या प्रतिकार पर ध्यान नहीं दिया और अपने लक्ष्य की तरफ़ आगे बढ़ती रहीं।

कल्पना चावलाः अंतरिक्ष में पहली भारतीय महिला

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा प्रांत के करनाल शहर में 1961 की पहली जुलाई को एक साधारण व्यापारी परिवार में हुआ था। पिता बनवारी लाल एक साधारण व्यापारी थे तथा माँ संयोगिता एक सामान्य गृहिणी। कल्पना की पढ़ाई-लिखाई भी सामान्य लड़कियों की तरह उनके शहर के स्कूल से शुरू हुई थी, लेकिन कल्पना ने अपने लक्ष्य को ध्यान में रखा और साहस के साथ आगे बढ़ती रहीं। जब कल्पना 11वीं कक्षा में पढ़ती थीं, तब अमेरिकी अंतरिक्ष यान 'बाइकिंग' मंगल ग्रह पर उतरा था। इस बात से कल्पना इतनी रोमांचित हुई कि उन्होंने अपनी कक्षा की परियोजना में मंगल ग्रह को दर्शाया। शुरू से ही कल्पना के मन में अंतरिक्ष-विज्ञान के प्रति लगाव रहा और वे अंतरिक्ष की यात्रा के सपने देखती रहीं। शायद यही कारण है कि परिवार वालों के लाख मना करने के बाद भी उन्होंने चंडीगढ़ के पंजाब इन्जीनियरिंग कॉलेज

चित्र 6.2

शब्दार्थ
अंतरिक्ष = आकाश; ग्रहों या तारों के बीच की शून्य जगह

टिप्पणी

एअरोनॉटिक्स = वैमानिकी; विमान-विज्ञान
एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग = वैमानिक अभियांत्रिकी; वैमानिकीय इन्जीनियरी

विशेषज्ञ = किसी विषय का विशेष जानकार
अभियान = मिशन; लक्ष्य

में एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग (वैमानिकी) को अपना विषय चुना। इसके लिए उनके सहपाठी उनका मज़ाक उड़ाते रहे कि देखो अब लड़कियाँ भी एअरोनॉटिकल इन्जीनियर बनने चली हैं, लेकिन उन्होंने किसी की परवाह नहीं की। 1982 में इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त कर कल्पना अपने परिवार वालों के कठोर विरोध के बावजूद आगे की पढ़ाई के लिए अमेरिका चली गईं। वहाँ उन्होंने टेक्सास विश्वविद्यालय एअरोस्पेस इन्जीनियरिंग में एम.एस. की डिग्री ली। तत्पश्चात्, बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से 1988 में एअरोस्पेस में पी-एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। इस तरह उनके अंतरिक्ष में जाने के सपने के साकार होने का भी वक्त आ गया। जब अमेरिकी अंतरिक्ष यान के कोलंबिया मिशन के लिए वैज्ञानिकों का चुनाव हो रहा था, तब 2962 प्रतियोगियों में उन्हें सर्वाधिक योग्य पाया गया और उस मिशन का विशेषज्ञ बनाया गया। इसके लिए कल्पना ने कठोर प्रशिक्षण लिया और 19 नवंबर को पहली बार अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। जब वह अंतरिक्ष में थीं तब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री इंद्र कुमार गुजराल ने उनसे बात करके उन्हें इस अभियान के लिए बधाई दी। उनका यह अभियान काफ़ी सफल रहा और इस दौरान उन्होंने कई नए प्रयोग कर सबसे अपनी योग्यता का लोहा मनवा लिया।

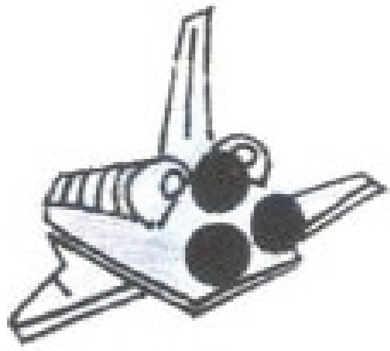

चित्र 6.3

फिर जब अमेरिका के अंतरिक्ष यान कोलंबिया के दूसरी बार अंतरिक्ष में जाने का कार्यक्रम बना, तो एक बार फिर कल्पना को उसके अभियान-दल में शामिल किया गया। 16 जनवरी, 2003 को कल्पना एक बार फिर 'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र' से अंतरिक्ष की यात्रा पर निकल पड़ीं। 16 दिन के इस अभियान में 80 प्रयोग किए गए, जिनमें मानव-शरीर, कैंसर कोशिकाओं की परीक्षा और कीट-पतंगों पर भारहीनता संबंधी प्रयोग शामिल थे। 29 जनवरी, 2003 को इस अभियान-दल के यात्रियों ने अपने इस मिशन को कामयाब बताया। लेकिन दुर्भाग्य कि 16 दिन की अपनी सफल यात्रा के बाद जब यह अभियान– दल 1 फ़रवरी, 2003 को पृथ्वी पर लौट रहा था, तो पृथ्वी से कुछ मिनट की दूरी पर ही

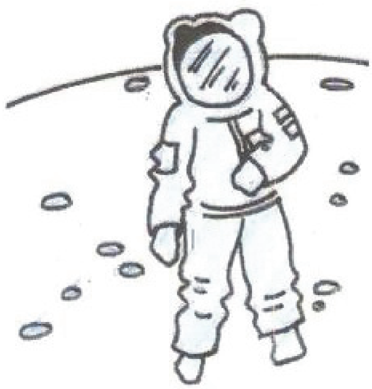

चित्र 6.4

इस दल का यान भयानक विस्फोट के साथ नष्ट हो गया और अपने अभियान-दल के बाकी सात साथियों के साथ अंतरिक्ष की यह बेटी अंतरिक्ष में ही खो गई।

कल्पना के इस दुर्भाग्यपूर्ण अंत से पूरी दुनिया स्तब्ध रह गई। भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने संसद में कल्पना के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए घोषणा की कि उनकी स्मृति में अंतरिक्ष-यान 'मेट सेट' का नाम 'कल्पना–1' रखा जाएगा।

इस प्रकार अदम्य साहस, दृढ़ इच्छा शक्ति और कर्त्तव्य-निष्ठा के बल पर भारत की बेटी कल्पना ने न सिर्फ़ महिला जाति का नाम ऊँचा किया, बल्कि पूरे देश का नाम भी विश्व-इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित कर दिया।

पाठगत-प्रश्न-6.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. जब पहली बार कल्पना चावला अंतरिक्ष में थीं, तब भारत के प्रधानमंत्री ने –

   (क) उन्हें ऐसे ख़तरे न उठाने की सलाह दी। ☐

   (ख) उन्हें जल्दी से जल्दी पृथ्वी पर लौट आने को कहा। ☐

   (ग) उन्हें कहा कि महिलाओं के लिए ऐसे करतब ठीक नहीं। ☐

   (घ) उन्हें इस अंतरिक्ष अभियान के लिए बधाई दी। ☐

2. पढ़े हुए अंश के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

   (क) 16 जनवरी 2003 को 'केनेडी अंतरिक्ष केंद्र' से आसमान में उड़े अंतरिक्ष-यान में बैठे लोगों में से एक कल्पना चावला भी थीं। ☐

   (ख) 'कोलंबिया मिशन' के लिए कल्पना भी चुन ली गई। ☐

   (ग) अपने सात साथियों के साथ 1 फ़रवरी, 2003 की शाम अंतरिक्ष की बेटी अंतरिक्ष में समा गई। ☐

   (घ) बोल्डर में कोलराडो विश्वविद्यालय से कल्पना चावला ने सन् 1988 में एअरोस्पेस में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। ☐

   (ङ) कल्पना चावला ने एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की डिग्री चंडीगढ़ इंजीनियरिंग कॉलेज से ली। ☐

   (च) हरियाणा राज्य के करनाल शहर के एक सामान्य व्यापारी बनवारी लाल के घर में एक साधारण गृहिणी संयोगिता ने सन् 1961 की पहली जुलाई को एक बिटिया को जन्म दिया, जो कल्पना कहलाई। ☐

टिप्पणी

3. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए :

कल्पना की दुखद मृत्यु के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री ने विशेष घोषणा की कि –

(क) कल्पना को सभी भारतीय वैज्ञानिक श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। ☐

(ख) मेट-सेट अब कल्पना–1 के नाम से जाना जाएगा ☐

(ग) हमें ऐसे ख़तरे आगे भी उठाते रहने होंगे। ☐

(घ) अंतरिक्ष से जुड़े शोध-कार्य कभी भी रुकने नहीं चाहिए। ☐

4. एअरोनॉटिकल इंजीनियरिंग को अपना विषय चुनने पर कल्पना चावला के सहपाठियों ने उसका मजाक उड़ाया। क्या आपके सही होने पर भी कभी आपके साथियों ने आपको गलत साबित करने की कोशिश की? तब आपने क्या किया?

(क) अपने साथियों की बात को मान लिया। ☐

(ख) उस दिशा में आगे न बढ़ने का निश्चय किया। ☐

(ग) साथियों से जानने का प्रयास किया कि सही क्या है। ☐

(घ) अपने साथियों को अपनी बात समझाते हुए अपना कार्य जारी रखा। ☐

6.1.2 बचेंद्री पाल : पहली महिला एवरेस्ट विजेता

कल्पना चावला की तरह ही बचेंद्री पाल भी साहस की पर्याय हैं। बचेंद्री को एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त है। बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले में परंपरागत पुरुष-वर्चस्व वाले एक साधारण भारतीय परिवार में हुआ था। पिता किशनपाल सिंह और माँ हंसादेई नेगी की पाँच संतानों में बचेंद्री तीसरी संतान हैं। बचेंद्री के बड़े भाई को पहाड़ों पर चढ़ना अच्छा लगता था, लेकिन जब बचेंद्री उनके साथ पहाड़ पर जाने की बात करती थीं, तो उन्हें डाँट कर मना कर दिया जाता था। इससे बचेंद्री का मनोबल और बढ़ा और पहाड़ पर चढ़ने की इच्छा दृढ़ होती गई। उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे भी वही करेंगी, जो लड़के करते हैं। वे किसी से पीछे

चित्र 6.5

शब्दार्थ

पर्वत-शिखर = पहाड़ की चोटी;

ज़ेहन = दिमाग

तानाशाह = अपनी ही बात मनवाने वाला; किसी की बात न मानने वाला

सर उठाने का मौका = गर्व करने का अवसर

जज़्बा = हौसला

नहीं रहेंगी, बल्कि उनसे बेहतर ही कर दिखाएँगी और इसी जज़्बे से पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया।

बचेंद्री को बचपन में रोज़ 5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण प्रशिक्षण के दौरान् उनका यह कठोर परिश्रम बहुत काम आया। आठवीं पास करने के बाद पिता ने उनकी पढ़ाई का ख़र्च उठाने से मना कर दिया। बचेंद्री ने इसका भी रास्ता तलाश किया। उन्होंने सिलाई का काम सीखा और सिलाई करके पढ़ाई का ख़र्च जुटाने लगीं। इस तरह उन्होंने संस्कृत से एम.ए. तथा बी.एड. की उपाधि प्राप्त की।

पढ़ाई के साथ-साथ बचेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखा। इसी दौरान बचेंद्री ने 'कालानाग' पर्वत की चढ़ाई की। 1982 में उन्होंने 'गंगोत्री ग्लेशियर' (ऊँचाई– 6,672 मी०) तथा 'रूड गैरा' (ऊँचाई– 5,819 मी०) की चढ़ाई की, जिससे इनमें आत्मविश्वास और बढ़ा।

अगस्त, 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ, तब वे पहली बार तेनज़िंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले पुरुष) तथा जुंके ताबी (एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला) से मिलीं। तब उन्होंने संकल्प किया कि वे भी उनकी ही तरह एवरेस्ट पर पहुँचेंगी। वह दिन भी आया, जब 23 मई, 1984 को दोपहर 1 बजकर 7 मिनट पर एवरेस्ट पर पहुँचकर भारत का झंडा फहरा दिया। उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे। इस तरह, बचेंद्री को एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।

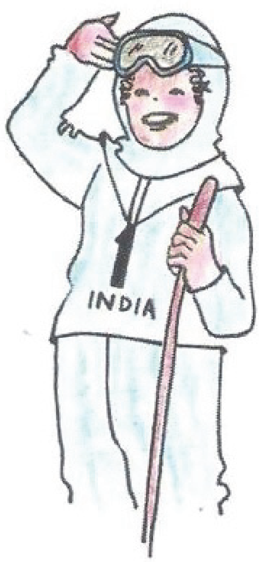

चित्र 6.6

हम कह सकते हैं कि अदम्य साहस और आत्मविश्वास के बल पर भारतीय महिलाओं ने पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई है। बहुत साधनों के न होते हुए भी उन्होंने लक्ष्यप्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों के सामने कभी घुटने नहीं टेके। उन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि अगर व्यक्ति में आत्मविश्वास, लगन, साहस

और दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो अभाव या अन्य कोई भी कठिनाई उनका रास्ता नहीं रोक सकती।

पाठगत प्रश्न-6.3

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   (i) एवरेस्ट अभियान-दल में बचेंद्री के साथ निम्न में से कौन था?

   (क) तेनज़िंग ☐ (ख) हंसा देई ☐

   (ग) जुंके ताबी ☐ (घ) अंग दोरजी ☐

   (ii) बचेंद्री का पर्वतारोही बनने का संकल्प किस बात से मज़बूत हुआ?

   (क) पिता द्वारा पढ़ाई का खर्च न देने से ☐

   (ख) लड़की होने के कारण उपेक्षा से ☐

   (ग) सिलाई द्वारा प्राप्त आमदनी से ☐

   (घ) उच्च शिक्षा से प्राप्त आत्मविश्वास से ☐

2. पाठ के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

   (क) अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए बचेंद्री ने सिलाई का काम सीखा और कपड़े सिले।

   (ख) बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले के एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ।

   (ग) 23 मई, 1984 को दिन के 1 बजकर 7 मिनट पर बचेंद्री ने माउंट एवरेस्ट पर भारतीय तिरंगा लहरा दिया।

   (घ) बड़े भाई द्वारा तिरस्कार से बचेंद्री का पर्वतारोहण का संकल्प और दृढ़ होता गया।

   (ङ) संसार के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाली वह प्रथम भारतीय महिला बन गई।

फ़ीचर क्या है?

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' शीर्षक पाठ को आपने पढ़ा। इसे फीचर की शैली में लिखा गया है।

आइए, जान लें कि फ़ीचर क्या है?

आप जानते हैं, अखबारों में समाचार छपते हैं। समाचारों से केवल यह जानकारी मिलती है कि क्या हुआ। उदाहरण के लिए, कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी, तो अखबारों में यह खबर छपी कि एक भारतीय महिला ने अंतरिक्ष की परिक्रमा की। लेकिन कल्पना कौन है, वह अंतरिक्ष में जाने का साहस कैसे जुटा पाई, उसकी इस बहादुरी ने समाज को किस प्रकार से प्रभावित किया? इन बातों को सरल भाषा और मनोरंजक शैली में बताया जाए, तो वह फ़ीचर होगा। अर्थात् 'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। "जो कुछ हुआ वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा", यह बताना फीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की आवाज़ गुँजा दी जाती है। अखबार के तीन काम बताए जाते हैं—सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना। समाचार सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें शिक्षित करते हैं और हमारा मनोरंजन करते हैं। फ़ीचर में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह रोचक भी हो। फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं या हो सकते हैं—जनरुचि वाले, गंभीर विश्लेषणात्मक, हल्के-फुल्के और मनोरंजक तथा व्यक्तित्व संबंधी। 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' अंश व्यक्तित्व संबंधी या 'पर्सनैलिटी फ़ीचर' है।

'फ़ीचर' पत्रकारिता जगत की महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें समसामयिक पकड़ को प्रधानता दी जाती है। यही कारण है कि इसको **'समाचारात्मक निबंध'** की संज्ञा दी जा सकती है। विषय प्रस्तुति ही फ़ीचर को शक्ति देता है। यह किसी पाठक के लिए शिक्षक, पथ-प्रदर्शक का काम करता है। इसकी भाषा सहज, सरल और सभी को समझ में आने वाली होती है। इसमें प्रसंगानुसार शब्दों का चयन किया जाता है। ये शब्द किसी भी भाषा के हो सकते हैं। जैसा कि आपने यहाँ ध्यान दिया होगा कल्पना चावला वाले अंश में इंजीनियरिंग की विविध शाखाएँ प्रचलित हैं—मैकेनिकल, कैमिकल या एअरोनोटिकल, इन्हें ज्यों का त्यों ले लिया गया है। इसी प्रकार अन्य अनेक अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी य़हाँ—वहाँ आपने पढ़ा है, उन पर ध्यान दीजिए।

फ़ीचर में शैली का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहाँ मनोरंजक शैली का ही प्रयोग किया गया है। इसके साथ चित्र, छाया-चित्र भी हों तो इसको **'सचित्र फ़ीचर'** कहते हैं, मात्र चित्र ही चित्र हों तो **'फ़ोटो फ़ीचर'**।

रेडियो-फ़ीचर भी होते हैं, किंतु ध्वनि-माध्यम होने के कारण उनकी शैली बिलकुल भिन्न होती है।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-6.1

1. आपको जो भी खिलाड़ी अच्छा लगता हो, उसकी विशेषताएँ बताते हुए उस पर फ़ीचर लिखिए।
2. अपनी माँ पर एक फीचर लिखिए।
3. अपने आसपास की किसी ऐसी महिला का चित्रण कीजिए जिन्होंने किसी–न–किसी क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया हो।

आपने क्या सीखा?

- 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँची महिलाओं पर लिखा गया है।
- महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं है। भारत की बेटियों ने अपने आत्मविश्वास, संकल्प और परिश्रम से ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जिससे भारत को पूरे संसार में सिर उठाने का मौका मिला है। नारियों में अदम्य शक्ति छिपी है। उन्हें उपयुक्त अवसर मिलना चाहिए। कल्पना चावला, बचेंद्री पाल जैसी बहादुर बेटियों की जीवन-कथाएँ सभी को प्रेरित करेंगी।
- दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। उनके विकास से ही किसी देश का, दुनिया का विकास संभव है।
- नारी-शक्ति की दृष्टि से भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। इन्हीं बातों को इस फ़ीचर में दो नारियों के माध्यम से बताया गया है। आधुनिक नारियाँ छुई-मुई नहीं हैं, वे शक्ति-स्वरूपा हैं।

योग्यता विस्तार

अब भारत में महिलाओं की रक्षा के लिए और उनके साथ किए जाने वाले भेदभाव के ख़िलाफ़ कई कानून बन गए हैं, जिनके द्वारा समाज में उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। हमारे यहाँ जन्म से पूर्व ही परीक्षण करवा कर संतान का लिंग पता कर लिया जाता था तथा यह पता चलने पर कि गर्भ में पलने वाली संतान कन्या होगी, कई बार गर्भपात करवा दिया जाता था। यह संभव न होने पर पैदा होते ही नवजात कन्या को मारने के उदाहरण भी सामने आए। इन सब स्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही 1994 में प्रसव-पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम पारित किया गया जिसके द्वारा गर्भावस्था में लिंग की पहचान पर रोक लगा दी गई। यही नहीं, भ्रूण-हत्या को अपराध घोषित करते हुए उचित दंड का भी प्रावधान किया गया। महिलाओं की रक्षा और सशक्तीकरण हेतु अनेक ऐसे नियम बनाए गए, जिनके द्वारा यदि पुरुष परिवार में अपना वर्चस्व साबित करने के लिए उन्हें प्रताड़ित करता है या परेशान करता है, तो वे उसे घरेलू हिंसा कानून के अंतर्गत दंडित करा सकती हैं। आज महिलाओं का आत्मविश्वास तो बढ़ा ही है वे स्वयं भी और अधिक साहसी बनी हैं। चाहे वह छेड़खानी का मामला हो, भेदभाव का मामला हो, दहेज़ का मामला हो या उनके साथ किसी तरह के अन्य अन्याय का; महिलाएँ स्वयं उठकर खड़ी हो जाती हैं और इसका विरोध करती हैं। अब तो महिलाओं ने अपने अधिकार के लिए कई स्वयंसेवी संगठन भी खोल लिए हैं। हाल ही में जब अमेरिका मानव-क्लोनिंग की वकालत कर रहा था, तब महिलाओं ने इसे मातृत्व के ख़िलाफ़ एक साज़िश बताया और उसके विरोध में उठ खड़ी हुईं। इसके परिणामस्वरूप पूरी दुनिया में मानव-क्लोनिंग पर रोक लगी।

इस तरह आधुनिक महिला ने अधिक आत्मविश्वासी, निर्भय, निर्णय लेने की क्षमता से परिपूर्ण, कर्त्तव्य-निष्ठ, ईमानदार और अनुशासन प्रिय होकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। वह अपने अधिकारों के प्रति पूरी तरह सजग और अन्याय के विरोध में कमर कसकर तैयार खड़ी है। बस ज़रूरत है उसकी क्षमता और कौशल को समझने की, उसे प्रोत्साहित करने की और उसकी सराहना करने की।

पाठांत प्रश्न

1. कल्पना चावला को लोगों ने एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग पढ़ने से क्यों मना किया? अगर आपके जीवन में ऐसी परिस्थिति आए, तो आप कल्पना चावला के जीवन से क्या प्रेरणा लेंगे?

टिप्पणी

2. बचेंद्री पाल ने सिलाई करके पढ़ाई जारी रखी। यदि आपके सामने भी इसी तरह की कोई आर्थिक या पारिवारिक समस्या आए, तो आप उसका हल किस प्रकार निकालेंगे? लिखिए।

3. फ़ीचर किसे कहते हैं? 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है'। सिद्ध कीजिए।

4. इस पाठ का शीर्षक आपको उचित लगता है या नहीं? यदि उचित लगता है तो क्यों?

5. कल्पना चावला और बचेंद्री पाल अपने विषय में सोच-समझकर स्वयं फ़ैसला लेने वाली, साहसी, दृढ़ निश्चयी, आत्म-विश्वासी महिलाएं हैं, इसीलिए वे आज इस रूप में याद की जाती हैं। इसी तरह की किसी एक महिला पर एक फ़ीचर लिखिए।

6. आज भी हमारे समाज के कुछ हिस्सों में लड़के और लड़की में भेद किया जाता है, क्या आपकी दृष्टि में यह उचित है–तर्कसहित लिखिए।

7. निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   तैराकी आनंद की वस्तु होने के साथ-साथ हमारी आवश्यकता भी है। नदियों के आसपास के गाँवों के लोग, सड़क-मार्ग न होने पर एक दूसरे से तभी मिल सकते हैं, जब उन्हें तैरना आता हो अथवा नदियों में नावें हों। प्राचीन काल में नावें कहाँ थीं? तब तो आदमी को तैरकर ही नदियों को पार करना पड़ता था। किंतु, तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भाँति तैरने की जन्मजात क्षमता नहीं है। जल में मछली आदि जलजीवों को स्वच्छंद विचरण करते देख मनुष्य ने उसी प्रकार तैरना सीखने का प्रयत्न किया और धीरे-धीरे उसने इस कार्य में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी है। विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

प्रश्न :

1. प्राचीन काल में तैराकी मनुष्य की आवश्यकता क्यों थी?
2. तैराकी व्यायाम है या खेल अथवा दोनों? सही तर्क देते हुए लिखिए।
3. इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए। अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।
4. अनुच्छेद से जातिवाचक संज्ञा के पाँच उदाहरण छाँटकर लिखिए।
5. अनुच्छेद से ऐसे दो–दो शब्द छाँटिए, जिनमें उपसर्ग या प्रत्यय हों। उन शब्दों में शामिल उपसर्ग तथा दो प्रत्ययों का भी उल्लेख कीजिए।

टिप्पणी

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1 1 (घ) 2. (च), (ङ), (घ), (ख), (क) (ग) 3. (ख) 4. (घ)

6.2 1 (ग) 2. (क) 3. (क), (घ), (ग), (ख)

6.3 (i) (घ) (ii) (ख) 2. (ख), (क), (घ), (ग), (ङ)